Dated 06/06/2020 D.El.Ed 4th Sem 2018-20 Time 12:15-1:00 Pm

आरम्भिक स्तर पर भाषा का पठन लेखन एवं गणितीय क्षमताओं का विकास

✲ संश्लेषणात्मक विधि के प्रकार —

① अक्षरबोध विधि -

इसे पारम्परिक विधि अथवा वर्ण-शिक्षण विधि तथा वर्णमाला पद्धति भी कहा जाता है। पठन सिखाने की सबसे प्राचीन विधि यही है। इसके अन्तर्गत समस्त अक्षरों को रटा कर शब्द और वाक्य बनाये जाते हैं। इस विधि का शिक्षण-क्रम इस प्रकार है-

① पहले वर्णमाला याद कराई जाती है।
② प्रत्येक अक्षर पर क्रमानुसार मात्रायें लगाकर बारहखड़ी याद कराई जाती है। तथा क का कि की के कै को कौ कं कः आदि।
③ अक्षरों के भिन्न-भिन्न प्रकार के योग समझाकर शब्द-निर्माण सिखाया जाता है।

✲ अक्षरबोध विधि के गुण —

गुणों में तीन बातें प्रमुख हैं।
① अक्षरों पर बल देने से शब्दों के अक्षरों को अलग-अलग पहचानने में सुविधा रहती है।
② कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक होने पर भी शिक्षण में कोई कठिनाई या बाधा उपस्थित नहीं होती।
③ अक्षरों के लेखन पर अधिक ध्यान रखने के कारण छात्रों के लेख में सुधार होता है।

✲ अक्षरबोध विधि के दोष —

① यह विधि वैज्ञानिक नहीं है। भाषा की इकाई वाक्य है। अतः

Scanned with CamScanner

वाक्य में से ही शब्द और अक्षर पर आना अधिक वैज्ञानिक प्रतीत होता है।

(2) अक्षरों के रटने में छात्रों को आनन्द नहीं आता भाषा सीखना उन्हें एक बोझ प्रतीत होने लगता है।

(3) इस प्रणाली से वाक्य निर्माण की क्रिया तक पहुँचने में वाक्यों का न तो आपस में एक दूसरे से कोई सम्बन्ध होता है और न ही व्यावहारिक जीवन से उनका कोई नाता तथा "पानी ला" "बिल्ली काली है" आदि। इससे विचारों में भी क्रमिकता उत्पन्न नहीं होती।

(4) आरम्भ में सहायक शब्द न सिखने के कारण पुस्तक का आरम्भिक भाग नीरस-सा रहता है।

~~X~~ सही उच्चारण की योग्यता—

(1) शुद्ध उच्चारण का अर्थ—

Scanned with CamScanner

ध्वनि उत्पन्न करने में श्वास-नली, कंठ, तालु, ओष्ठ, जिह्वा, दन्त मूर्धा तथा नासिका का प्रयोग होता है। जब श्वास-नली द्वारा वायु बाहर निकलती है और इसका अवरोध केवल श्वास-नली में ही होता है तब स्वरों का उच्चारण होता है और जब किसी अन्य स्थान पर भी अथवा अन्य स्थान पर ही वायु रुकती है तब व्यंजनों की अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न स्थानों पर जिह्वा के स्पर्श से अलग-अलग ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों के लिए भिन्न-भिन्न वर्ण अथवा वर्णसमूह निश्चित होते हैं। यही भाषा का ध्वनि तत्व है।

Scanned with CamScanner

इन्हीं ध्वनियों के निश्चित वर्ण को पूर्व-निश्चित ध्वनि के साथ बोलना। शुद्ध उच्चारण कहलाता है।

पारावलाकय शिक्षा के अनुसार अच्छे उच्चारण के छः गुण माने गये हैं।
अर्थात माधुर्य अक्षरों की स्पष्टता, पदों का पृथक-पृथक उच्चारण, सुन्दर स्वर, धैर्य तथा लय-समर्थता मिलकर अच्छे उच्चारण की संज्ञा प्राप्त करते हैं।

HARVESH CHANDRA
ASSISTANT PROFESSOR
06/06/2020.

Scanned with CamScanner